development, sustainable **संपोषक विकास**

ऐसा विकास जो पर्यावरण को किसी प्रकार की क्षति न पहुंचाता हो और न ही यह किसी प्रकार का नवीन पर्यावरणात्मक बोझ लादता हो, संपोषक विकास कहलाता है। इसे 'पारिस्थितिकीय विकास' (इकोडेवलपमेंट) के नाम से भी जानते हैं। इस अवधारणा का विकास आधुनिक विकास योजनाओं के फलस्वरूप उत्पन्न हुई पर्यावरणात्मक पतन की समस्याओं (जैसे सभी प्रकार के प्रदूषणों की समस्या, जनसंख्या के विस्थापन की समस्या) के संदर्भ में हुआ है। सन् 1987 में 'पर्यावरण और विकास के विश्व आयोग' ने इस अवधारणा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "संपोषक विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है जो आने

Scanned with CamScanner

वाली पीढ़ियों (भविष्यगत पीढ़ियों) की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की योग्यता के साथ बिना समझौता किये हुए वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।" 'विश्व संरक्षण संघ' के अनुसार, "पारिस्थितिकीय व्यवस्था की सीमाओं के साथ बिना छेड़छाड़ किये मानवीय जीवन की क्षमता में सुधार को संपोषक विकास कहते हैं। संपोषक विकास के समर्थकों ने अपने पर्यावरण को जानने और उसके प्रयोग करने के बारे में व्यक्तियों के जीवन में निम्नलिखित परिवर्तन लाने का सुझाव दिया है: (1) व्यक्तियों को अपनी विश्व-दृष्टि और मूल्यों में परिवर्तन करना चाहिये। इस बारे में उनमें जागरूकता उत्पन्न करना चाहिये कि प्राकृतिक संसाधन सीमित होते हैं; (2) व्यक्तियों को इसकी जानकारी होनी चाहिये कि विकास और पर्यावरण में एक प्रकार की संगति होती है। दूसरे शब्दों में, विकास भविष्य की आर्थिक समृद्धि की सबसे अच्छी गारंटी है; (3) विश्व के सभी व्यक्तियों को यह समझना चाहिये कि आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताएं हमारी आज की आवश्यकताओं से अधिक होंगी; (4) व्यक्तियों को उपयुक्त तकनीकों के प्रयोग द्वारा आत्मनिर्भर होने का प्रयास करना चाहिये, जैसे ग्रामीण व्यक्तियों को बिजली की अपनी आवश्यकताओं के लिये अधिकाधिक सौर ऊर्जा पर निर्भर रहना चाहिये; (5) विकासशील देशों को अपनी जनसंख्या वृद्धि को सीमित करना चाहिये। इसके लिये स्त्रियों की प्रस्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और सामाजिक सेवाओं में सुधार किये जाने की आवश्यकता है; (6) विकासशील देशों में अधिक भूमि का अधिक समान वितरण किये जाने की आवश्यकता है; (7) विकासशील देशों में अति उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति में कमी लायी जानी चाहिये; (8) विकसित एवं विकासशील देशों में सम्पदा का पुनर्वितरण किया जाना चाहिये क्योंकि पर्यावरणात्मक पतन का मुख्य कारण गरीबी है।

Scanned with CamScanner